

महाभारतदर्पण

चतुर्थ भाग

शांतिपर्व चतुर्थः, अश्वमेध, अश्वमेध
सुराज, महाभारत, लक्ष्मीराज
श्री हरिवंशपर्व सहित

स्वस्ति श्री महाराजाधिराज श्रीराज
काशिराजकी प्राज्ञाद्वारा

प्रकाशित कथा वरों ने संस्कृत
सारांश व्याख्यात किया है
पूर्णसाधन

प्रकाशित कथा वरों ने संस्कृत
प्रकाशमुद्राप्रदान श्रीपंडितलक्ष्मीनारायण ने
शुद्धकराय संवत् १८८६ में मुद्रा तकराया था

सम्पूर्ण विद्यालयों के प्रचारण और
विद्यालयों के प्रचारण के
वापसी के प्रचारण के प्रचारण के

तीसरी बार

लखनऊ

(श्रीमती) ने प्रकाशित किया है